रविवार 6 अक्टूबर, 2019

*विषय — **कल्पना***

स्वर्ण पाठ: इफिसियों 5 : 14

"हे सोने वाले जाग और मुर्दों में से जी उठ; तो मसीह की ज्योति तुझ पर चमकेगी॥"

उत्तरदायी अध्ययन: **यशायाह 60 : 1-4, 18-20**

1 उठ, प्रकाशमान हो; क्योंकि तेरा प्रकाश आ गया है, और यहोवा का तेज तेरे ऊपर उदय हुआ है।
2 देख, पृथ्वी पर तो अन्धियारा और राज्य राज्य के लोगों पर घोर अन्धकार छाया हुआ है; परन्तु तेरे ऊपर यहोवा उदय होगा, और उसका तेज तुझ पर प्रगट होगा।
3 और अन्यजातियां तेरे पास प्रकाश के लिये और राजा तेरे आरोहण के प्रताप की ओर आएंगे॥
4 अपनी आंखें चारो ओर उठा कर देख।
18 तेरे देश में फिर कभी उपद्रव और तेरे सिवानों के भीतर उत्पात वा अन्धेर की चर्चा न सुनाईं पड़ेगी; परन्तु तू अपनी शहरपनाह का नाम उद्धार और अपने फाटकों का नाम यश रखेगी।
19 फिर दिन को सूर्य तेरा उजियाला न होगा, न चान्दनी के लिये चन्द्रमा परन्तु यहोवा तेरे लिये सदा का उजियाला और तेरा परमेश्वर तेरी शोभा ठहरेगा।
20 तेरा सूर्य फिर कभी अस्त न होगा और न तेरे चन्द्रमा की ज्योति मलिन होगी; क्योंकि यहोवा तेरी सदैव की ज्योति होगा और तरे विलाप के दिन समाप्त हो जाएंगे।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. उत्पत्ति 1: 1, 26 (*से* :), 27, 31 (*से 1st* .)

1 आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।
26 फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं।
27 तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की।
31 तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है।

2. उत्पत्ति 2 : 6, 7, 21 (*से* :)

6 तौभी कोहरा पृथ्वी से उठता था जिस से सारी भूमि सिंच जाती थी
7 और यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया; और आदम जीवता प्राणी बन गया।
21 तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भारी नीन्द में डाल दिया, और वह सो गया।

3. नीतिवचन 6: 9, 20, 22, 23 (*से 1st* ;)

9 हे आलसी, तू कब तक सोता रहेगा? तेरी नींद कब टूटेगी?
20 हे मेरे पुत्र, मेरी आज्ञा को मान, और अपनी माता की शिक्षा का न तज।
22 वह तेरे चलने में तेरी अगुवाई, और सोते समय तेरी रक्षा, और जागते समय तुझ से बातें करेगी।
23 आज्ञा तो दीपक ह।

4. यशायाह 52 : 1 (*से 2nd* ,), 2 (*से 1st* ,), 5, 6

1 जाग, जाग! अपना बल धारण कर।
2 अपने ऊपर से धूल झाड़ दे, उठ॥
5 इसलिये यहोवा की यह वाणी है कि मैं अब यहां क्या करूं जब कि मेरी प्रजा सेंतमेंत हर ली गई है? यहोवा यह भी कहता है कि जो उन पर प्रभुता करते हैं वे उधम मचा रहे हैं, और, मेरे नाम कि निन्दा लगातार दिन भर होती रहती है।
6 इस कारण मेरी प्रजा मेरा नाम जान लेगी; वह उस समय जान लेगी कि जो बातें करता है वह यहोवा ही है; देखो, मैं ही हूं॥

5. यूहन्ना 11 : 1, 4 (*से 2nd* ,), 11 (हमारी)-15, 17, 32-34, 38-44

1 मरियम और उस की बहिन मारथा के गांव बैतनिय्याह का लाजर नाम एक मनुष्य बीमार था।
4 यह सुनकर यीशु ने कहा।
11 कि हमारा मित्र लाजर सो गया है, परन्तु मैं उसे जगाने जाता हूं।
12 तब चेलों ने उस से कहा, हे प्रभु, यदि वह सो गया है, तो बच जाएगा।
13 यीशु ने तो उस की मृत्यु के विषय में कहा था: परन्तु वे समझे कि उस ने नींद से सो जाने के विषय में कहा।
14 तब यीशु ने उन से साफ कह दिया, कि लाजर मर गया है।

15 और मैं तुम्हारे कारण आनन्दित हूं कि मैं वहां न था जिस से तुम विश्वास करो, परन्तु अब आओ, हम उसके पास चलें।
17 सो यीशु को आकर यह मालूम हुआ कि उसे कब्र में रखे चार दिन हो चुके हैं।
32 जब मरियम वहां पहुंची जहां यीशु था, तो उसे देखते ही उसके पांवों पर गिर के कहा, हे प्रभु, यदि तू यहां होता तो मेरा भाई न मरता।
33 जब यीशु न उस को और उन यहूदियों को जो उसके साथ आए थे रोते हुए देखा, तो आत्मा में बहुत ही उदास हुआ, और घबरा कर कहा, तुम ने उसे कहां रखा है?
34 उन्होंने उस से कहा, हे प्रभु, चलकर देख ले।
38 यीशु मन में फिर बहुत ही उदास होकर कब्र पर आया, वह एक गुफा थी, और एक पत्थर उस पर धरा था।
39 यीशु ने कहा; पत्थर को उठाओ: उस मरे हुए की बहिन मारथा उस से कहने लगी, हे प्रभु, उस में से अब तो दुर्गंध आती है क्योंकि उसे मरे चार दिन हो गए।
40 यीशु ने उस से कहा, क्या मैं ने तुझ से न कहा था कि यदि तू विश्वास करेगी, तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी।
41 तब उन्होंने उस पत्थर को हटाया, फिर यीशु ने आंखें उठाकर कहा, हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि तू ने मेरी सुन ली है।
42 और मै जानता था, कि तू सदा मेरी सुनता है, परन्तु जो भीड़ आस पास खड़ी है, उन के कारण मैं ने यह कहा, जिस से कि वे विश्वास करें, कि तू ने मुझे भेजा है।
43 यह कहकर उस ने बड़े शब्द से पुकारा, कि हे लाजर, निकल आ।
44 जो मर गया था, वह कफन से हाथ पांव बन्धे हुए निकल आया और उसका मुंह अंगोछे से लिपटा हुआ तें यीशु ने उन से कहा, उसे खोलकर जाने दो॥

6. प्रेरितों के काम 26 : 8, 16 (वृद्धि) (*से* :), 18 (खुला) (*से 1st* ,), 18 (मोड़) (*से 2nd* ,), 27 (मैं)

8 जब कि परमेश्वर मरे हुओं को जिलाता है, तो तुम्हारे यहां यह बात क्यों विश्वास के योग्य नहीं समझी जाती?
16 ...परन्तु तू उठ, अपने पांवों पर खड़ा हो।
18 ... उन की आंखे खोले। ...कि वे अंधकार से ज्योति की ओर।
27 मैं जानता हूं, कि तू प्रतीति करता है।

7. I कुरिन्थियों 15 : 22, 33 (*से* :), 34 (*से* ;), 45, 47, 49, 51 (हम)

22 और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसा ही मसीह में सब जिलाए जाएंगे।
33 धोखा न खाना, ।
34 धर्म के लिये जाग उठो और पाप न करो॥

45 ऐसा ही लिखा भी है, कि प्रथम मनुष्य, अर्थात आदम, जीवित प्राणी बना और अन्तिम आदम, जीवनदायक आत्मा बना।
47 प्रथम मनुष्य धरती से अर्थात मिट्टी का था; दूसरा मनुष्य स्वर्गीय है।
49 और जैसे हम ने उसका रूप जो मिट्टी का था धारण किया वैसे ही उस स्वर्गीय का रूप भी धारण करेंगे॥
51 देखे, मैं तुम से भेद की बात कहता हूं: कि हम सब तो नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे।

8. रोमियो 13: 1, 11, 12

1 हर एक व्यक्ति प्रधान अधिकारियों के आधीन रहे; क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं, जो परमेश्वर की ओर स न हो; और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं।
11 और समय को पहिचान कर ऐसा ही करो, इसलिये कि अब तुम्हारे लिये नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुंची है, क्योंकि जिस समय हम ने विश्वास किया था, उस समय के विचार से अब हमारा उद्धार निकट है।
12 रात बहुत बीत गई है, और दिन निकलने पर है; इसलिये हम अन्धकार के कामों को तज कर ज्योति के हथियार बान्ध लें।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 516 : 9 केवल

ईश्वर सभी चीजों का, उसकी अपनी समानता पर पक्षपात करता है।

2. 249 : 21 (परमेश्वर)-22

भगवान कभी नहीं थमता है, और उसकी समानता कभी सपने नहीं करती है।

3. 556 : 18-24

नींद में अंधेरा है, लेकिन भगवान का रचनात्मक जनादेश था, "प्रकाश होने दो।" नींद में, कारण और प्रभाव केवल भ्रम हैं। वे कुछ प्रतीत होते हैं, लेकिन नहीं हैं। विस्मरण और सपने, यथार्थ नहीं, नींद के साथ आते हैं। यहां तक कि आदम-विश्वास पर भी चलता है, जिसमें से नश्वर और भौतिक जीवन सपना है।

4. 230 : 4 (जगाना)-8

... इस नश्वर सपने से जागृति, या भ्रम, हमें स्वास्थ्य, पवित्रता और अमरता में लाएगा। यह जागृति हमेशा के लिए मसीह के आने की है, सत्य का उन्नत रूप है, जो त्रुटि को बाहर निकालता है और बीमारों को भर देता है।

5. 493 : 24-2

वह आदमी भौतिक है, और वह मामला ग्रस्त है, - ये प्रस्ताव केवल भ्रम में वास्तविक और स्वाभाविक लग सकते हैं। मामले में आत्मा की कोई भी भावना होने की वास्तविकता नहीं है।

यदि यीशु ने मौत के सपने, भ्रम से लाजर को जगाया, तो यह साबित हुआ कि मसीह गलत अर्थों में सुधार कर सकता है। शक्ति और दिव्य मन की इच्छा के इस घाघ परीक्षण पर संदेह करने की हिम्मत कौन करता है कि मनुष्य हमेशा के लिए अपनी पूर्ण स्थिति में बरकरार रहे, और मनुष्य की संपूर्ण क्रिया को संचालित करे?

6. 75 : 12-20

यीशु ने लाजर के बारे में कहा: "कि हमारा मित्र लाजर सो गया है, परन्तु मैं उसे जगाने जाता हूं।" यीशु ने लाजर को इस समझ के साथ बहाल किया कि लाजर की मृत्यु कभी नहीं हुई थी, न कि इस बात से कि उसका शरीर मर गया था और फिर दोबारा जीवित हो गया था। अगर यीशु का मानना था कि लाजर उसके शरीर में रहता या मर गया है, तो मास्टर विश्वास के उसी तल पर खड़े होते थे, जो शरीर को दफनाते थे, और वे इसे पुनर्जीवित नहीं कर सकते थे।

7. 76 : 18-21

दुख, पाप, मरते विश्वास असत्य हैं। जब दैवीय विज्ञान को सार्वभौमिक रूप से समझा जाता है, तो उनके पास मनुष्य पर कोई शक्ति नहीं होगी, क्योंकि मनुष्य अमर है और दिव्य अधिकार से जीवित है।

8. 472 : 26-30

इसलिए पाप, बीमारी या मृत्यु की एकमात्र वास्तविकता यह भयानक तथ्य है कि अवास्तविकता मानव को वास्तविक लगती है, विश्वास को गलत करती है, जब तक कि भगवान उनके भेस को बंद नहीं करता। वे सत्य नहीं हैं, क्योंकि वे भगवान के नहीं हैं।

9. 417 : 20-26

क्रिश्चियन साइंस हीलर के लिए, बीमारी एक सपना है जिसमें से रोगी को जागृत करने की आवश्यकता होती है। रोग चिकित्सक को वास्तविक नहीं दिखना चाहिए, क्योंकि यह प्रदर्शन है कि रोगी को ठीक करने का तरीका उसके लिए बीमारी को असत्य बनाना है। ऐसा करने के लिए, चिकित्सक को विज्ञान में रोग की असत्यता को समझना चाहिए।

10. 396 : 26-32

इस बात का ध्यान रखें कि मनुष्य ईश्वर की संतान है, मनुष्य की नहीं; वह आदमी आध्यात्मिक है, भौतिक नहीं; वह आत्मा आत्मा है, पदार्थ के बाहर, उसमें कभी नहीं, शरीर को कभी भी जीवन और अनुभूति नहीं देना। यह बीमारी के सपने को यह समझने के लिए तोड़ती है कि बीमारी का निर्माण मानव मन से होता है, न कि पदार्थ से और न ही दिव्य मन से।

11. 71 : 10-20

अपनी आँखें बंद करो, और आप सपने देख सकते हैं कि आप एक फूल देखते हैं, - कि आप इसे छूते हैं और इसे सूंघते हैं। इस प्रकार आप सीखते हैं कि फूल तथाकथित मन का एक उत्पाद है, जो पदार्थ के बजाय विचार का निर्माण है। अपनी आँखें फिर से बंद करें, और आप परिदृश्य, पुरुषों और महिलाओं को देख सकते हैं। इस प्रकार आप सीखते हैं कि ये भी चित्र हैं, जो नश्वर मन धारण करते हैं और विकसित होते हैं और जो मन, जीवन और बुद्धि का अनुकरण करते हैं। स्वप्नों से आप यह भी सीखते हैं कि न तो नश्वर मन और न ही ईश्वर की छवि या समानता है, और यह अमर मन की बात नहीं है।

12. 250: 14-27 (*से 2nd.*)

नश्वर शरीर और मन एक हैं, और उस एक को मनुष्य कहा जाता है; लेकिन मनुष्य नश्वर नहीं है, क्योंकि मनुष्य अमर है। एक नश्वर थका हुआ या दर्द हो सकता है, आनंद या पीड़ित हो सकता है, सपने के अनुसार वह नींद में मनोरंजन करता है। जब वह सपना गायब हो जाता है, तो नश्वर खुद को इन स्वप्न-संवेदनाओं में से किसी का अनुभव नहीं करता है। प्रेक्षक के लिए, शरीर सुनता नहीं है, अव्यक्त, और संवेदनाहीन, और मन अनुपस्थित लगता है।

अब मैं पूछता हूं, क्या नींद के सपने की तुलना में नश्वर अस्तित्व के जागने के सपने में कोई और वास्तविकता है? वहाँ नहीं हो सकता है, क्योंकि जो कुछ भी एक नश्वर आदमी प्रतीत होता है वह एक नश्वर सपना है। नश्वर मन को हटाओ, और मनुष्य के पास वृक्ष के रूप में जितना मनुष्य है, उससे अधिक कोई अर्थ नहीं है। लेकिन आध्यात्मिक, वास्तविक मनुष्य अमर है।

13. 491 : 21-23, 28-2

विज्ञान भौतिक मनुष्य को वास्तविक रूप में प्रकट करता है। सपना या विश्वास चलता है, चाहे हमारी आँखें बंद हों या खुली हों।

जब हम जागते हैं, हम पदार्थ के दर्द और सुख का सपना देखते हैं। कौन कहेगा, भले ही वह क्रिश्चियन साइंस को नहीं समझता है, यह सपना - सपने देखने वाले के बजाय - नश्वर मनुष्य नहीं हो सकता है? कौन तर्कसंगत रूप से कह सकता है अन्यथा, जब सपना शरीर में नश्वर मनुष्य को छोड़ देता है और विचार करता है, हालांकि तथाकथित सपने देखने वाला बेहोश है?

14. 223 : 25-31

अपने त्रुटिपूर्ण स्वप्न से सोचे गए थप्पड़ को शुरू करने वाले छिद्र आंशिक रूप से अनसुने होते हैं; लेकिन अंतिम ट्रम्प ने आवाज़ नहीं दी है, या ऐसा नहीं होगा। मार्वल, विपत्तियाँ और पाप बहुत अधिक लाजिमी हैं क्योंकि सत्य नश्वर लोगों से उनके द्वारा किए गए दावों पर जोर देता है; लेकिन पाप का भयानक साहस पाप को नष्ट कर देता है, और सत्य की विजय का अनुमान लगाता है।

15. 347 : 26-27

स्वप्न जो मायने रखता है और त्रुटि है वह कुछ कारण और रहस्योद्घाटन के लिए उपज होना चाहिए।

16. 529 : 8 (यह)-12

... यह रहस्योद्घाटन अस्तित्व के सपने को नष्ट कर देगा, वास्तविकता को बहाल करेगा, विज्ञान में प्रवेश और निर्माण के गौरवशाली तथ्य, कि स्त्री और पुरुष दोनों ईश्वर से आगे बढ़ते हैं और उनके अनन्त बच्चे हैं, जिनका कोई भी कम माता-पिता नहीं है।

17. 218 : 32-2

जब हम होने के सत्य के लिए जागते हैं, तो सभी रोग, दर्द, कमजोरी, थकावट, दु:ख, पाप, मृत्यु, अज्ञात होंगे, और नश्वर सपना हमेशा के लिए खत्म हो जाएगा।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6